• यौमे जम्हूरिया •

◉ काबिले एहतराम जनाब सदरे जल्सा, सदरे मुदर्रिस, हाजिरिने इकराम, असातिजा इकराम और सामने बैठे मेरे हम तालीम भाईयों और बहनों मैं आपके सामने यौमे जम्हूरिया के इस मुबारक मौके पर कुछ अल्फाज पेश करना चाहता हूँ अगर नाचीज से गलती हो जाए तो दरगुजर फरमावें।

◉ आज के इस मुबारक मौके पर मैं मुल्क के तमाम बाशिन्दों को यौमे जम्हूरिया की मुबारकबाद पेश करता हूँ। आज ही के दिन 26 जनवरी 1950 ई॰ को हमारे मुल्क का दस्तूर नाफिज हुआ था जिसका मकसद था अवाम की हुकूमत, अवाम के जरिये अवाम के लिए है।

इससे पहले हमारा मुल्क अंग्रेजों का गुलाम था अंग्रेज इस मुल्क में तिजारत की गरज से आये लेकिन उन्होंने रफ्ता-रफ्ता अपनी चालाकी और मक्कारी से इस मुल्क के इंतजामात में दखल देना शुरू कर दिया। वह यहाँ के हाकिम बन बैठे और इस मुल्क में लूट मार करना, यहाँ के बाशिन्दों पर जुल्म करना, नाइंसाफी करना, यहाँ का कीमती माल कम दाम पर खरीदकर अपने मुल्क ब्रिटेन भेजना शुरू कर दिया इस तरह उनकी इस ज्यादती से यहाँ की अवाम बैचेन थी आखिरकार हमारे मुल्क को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने के लिए हमारे रहनुमाओं ने जद्दोजहद शुरू की, लाठियाँ खाई, पत्थर खाए, जेल गए, वतने अजीज के लिए हँसते-हँसते शहादत को गले लगाया इस तरह अंग्रेजों को इस मुल्क को छोड़ने पर मजबूर कर दिया और आखिरकार यह मुल्क 15 अगस्त 1947 ई॰ को आजाद हुआ।

हमारे रहनुमाओं ने यह ख्वाब देखा था कि यहाँ का हर शहरी मिलजुलकर रहे, आपस में इत्तफाक व इत्तहाद से रहे ताकि यहाँ फिर बेरूनी ताकत लड़ाओ और हुकूमत करो की पॉलिसी न अपनाए। आज इस मुल्क में जात-पात के नाम पर फिरकावाराना तजाद पैदा करके मजहब के नाम पर सियासत की रोटियाँ सैंकी जा रही हैं हर तरफ तबाही मची है।

हमारा फर्ज बनता है कि हम इस मुल्क की तरक्की में हमेशा तआवुन करें ताकि हमारा मुल्क हिन्दुस्तान हमेशा सोने की चिड़िया बना रहे।

Scanned by CamScanner

किसी शायर ने कहा है—

हम अपनी आजादी को भुला सकते नहीं।
सर झुका सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं॥

इन्कलाब जिन्दाबाद, हिन्दुस्तान जिंदाबाद

• खुदा हाफिज •

Scanned by CamScanner